वर्ष-1, अंक-6, नवंबर 2017, जे-7, श्रीरामनगर, रायपुर, छ.ग.)
आर. एन. आई. पजीकरण क्रमांक CHHHIN/2017/72506

किलोल

संपादक - डा. आलोक शुक्ला
सह-संपादक - एम. सुधीश

संपादक मंडल -
राजेंद्र कुमार विश्वकर्मा , शेख अजहरुद्दीन

प्यारे बच्चों,

हमेशा की तरह यह अंक भी http://www.alokshukla.com पर नि:शुल्क डाउनलोड के लिये उपलब्ध है. आप इसे मोबाइल पर डाउनलोड करके भी पढ़ सकते हैं. आप पत्रिका को प्रिंट करके भी अपनी शाला के सभी बच्चों को पढ़ने को दे सकते हैं. आप सबके सहयोग से पत्रिका का प्रसार धीरे-धीरे बढ़ रहा है. चित्र कहानी के लिये हमे इस बार बहुत सी कहानियां मिली हैं. एक नन्हे बच्चे की कहानी भी मिली है जिसे इस अंक में प्रकाशित किया गया है. सभी से अनुरोध है कि सामान्य ज्ञान, विज्ञान के खेल आदि से संबंधित आलेख भी भेजें. इसी प्रकार चुटकुले और पहेलियां भी अवश्य प्रेषित करें. कहानियों के साथ ही हमें बालगीतों की भी बहुत आवश्यकता है. अपनी रचनाएं आप dr.alokshukla@gmail.com पर ई-मेल व्दारा भेज सकते हैं। सभी बच्चों को मेरा प्यार.

आलोक शुक्ला

बगुला भगत

एक तालाब में बहुत सी मछलियां रहती थी. तालाब के किनारे एक धूर्त और दुष्ट बगुला साधु का भेष बनाकर बैठा था. वह तालाब की मछलियों से अपना पेट भरने का उपाय सोच रहा था.

तालाब की मछलियों ने बगुले को उदास देखकर पूछा - क्या बात है मामा ! आज बहुत चिंतित हो.

बगुले ने कहा - बस तुम्हीं लोगों की चिंता में हूं. इस तालाब का पानी दिनोंदिन कम हो रहा है.

मछलियां घबरा गईं. उन्होने पूछा - तो हम क्या करें.

बगुला बोला - अब एक ही उपाय है. मैं एक-एक करके तुम सबको अपनी चोंच में पकड़ कर दूर एक बड़े तालाब में छोड़ आऊं.

मछलियों को शंका हुई. उन्होने कहा - लेकिन मामा ! इस दुनिया में आज तक कोई बगुला ऐसा नहीं हुआ जिस ने मछलियों की भलाई के बारे में सोचा हो. भला हम तुम पर कैसे विश्वास कर लें.

बगुले ने अब अपनी चाल चली. उसने कहा - तुम लोग किसी एक मछली को मेरे साथ भेजो. मैं उसे वह तालाब दिखा लाऊंगा. तुम उससे पूछ लेना. अगर विश्वास हो जाए तो तुम सब एक-एक कर चलना.

मछलियां धूर्त बगुले की चाल में आ गई. उन्होंने एक मछली को बगुले के साथ भेज दिया. बगुला उसे बड़ा तालाब दिखा कर ले आया. उस मछली ने बड़े तालाब का बड़ा सुंदर वर्णन किया. उससे प्रभावित होकर सभी मछलियां चलने को तैयार हो गई.

अब बगुला उस तालाब में से एक मछली को ले जाता और दूर जंगल में एक बड़े तालाब के किनारे बड़ी चट्टान पर उसे मार कर खा जाता. इस तरह उसने तालाब की सारी मछलियां खा लीं. चट्टान के पास मछलियों की हड्डियों का ढेर लग गया.

तालाब में अब केवल एक केकड़ा बचा था. बगुला उसे भी खाना चाहता था. केकड़ा चालाक था. बोला मैं तुम्हारी चोंच में दब कर नहीं चल सकता. कहो तो, मैं गर्दन पर बैठकर चलूं. बगुले ने सोचा, तू किसी तरह चट्टान तक तो चल. फिर तो मैं खा ही जाऊंगा. इस तरह उसने केकड़े की बात मान ली. बगुला अपनी गर्दन पर केकड़े को लेकर चट्टान के पास पहुंचा. मछलियों की हड्डियां देखकर केकड़ा सारा मामला समझ गया. उसने बगुले की गर्दन पर अपने कांटे गड़ाए और बोला - तू मुझे सही तरह से तालाब के किनारे ले चलता है या गर्दन दबा दूं. बगुला पीड़ा से कराह उठा. वह केकड़े को चुपचाप तालाब के किनारे ले गया.

केकड़े ने कहा अब तुझे अपनी करनी का फल मिलना चाहिए. उसने बगुले की गर्दन दबा कर उसे खत्म कर दिया. केकड़ा तालाब के पानी में चला गया. उसने जाते-जाते कहा - धूर्त और दुष्ट व्यक्ति सदा सुखी नहीं रहते. एक ना एक दिन उनकी यही दशा होती है.

बंदर मामा

बंदर मामा पहन पजामा दावत खाने आये हैं

नीली टोपी पीला कुरता पहन बहुत इतराए हैं

रसगुल्ले पर जी ललचाया मुंह में रखा गप से

नरम नरम था गरम गरम था जीभ जल गई लप से

बंदर मामा रोते रोते वापस घर को आये हैं

फेंकी टोपी फेंका जूता रोये और पछताये हैं

Humpty Dumpty

Humpty Dumpty sat on the wall,

Humpty Dumpty had a great fall.

All the king's horses

And all the king's men

Couldn't put Humpty Dumpty

Together again.

चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक का चित्र हम नीचे दे रहे हैं -

इस चित्र पर हमें अनेक कहानियां प्राप्त हुई हैं. उनमें से कुछ हम प्रकाशित कर रहे हैं -

हौसले की उड़ान

लेखक - रामफल यादव

ऊँचे पहाड़ी क्षेत्र में एक गाँव था. इस गाँव का नाम अकेलाखेड़ी था. यहाँ जीवन निर्वाह करना बहुत कठिन था. इसी गाँव के पास "गुणागर" नमक खरगोश भी रहता था. वह हमेशा खुश रहता था. एक दिन पेड़ों को उदास देखकर गुणागर पेड़ों से बोला - "आप इतने उदास क्यों खड़े हो?" पेड़ों ने रुआँसे स्वर में कहा - "गुणागर भाई! हम अपने जीवन को बचाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं. ऐसा लगता है कि अब हमारा जीवन नहीं बच पाएगा?'' गुणागर खरगोश ने कहा - मन छोटा मत करो पेड़ भाइयों! सुख-दुख तो जीवन के दो पहलू हैं. हमें विषम समय में भी हौसला नहीं छोड़नी चाहिए. धीरज रखो एक दिन हम अपने हौसले के पँख से

आसमान पर अवश्य उड़ेंगे. सभी गुणागर की बात मानकर, मन में हौसला रखकर जीवन बिताने लगे. समय बीतता गया और बसंत का मौसम आया. धूप अच्छी मिलने लगी. पेड़ों पर नयी कोंपलें आ गईं. सभी आनंदित हुए. गुणागर खरगोश को हौसले की उड़ान भरते देख सभी आनंदित स्वर में बोल उठे- "गुणागर भैया! - हम सभी आपके साथ हौसले की उड़ान भरने को तैयार हैं। हम सभी को भी आसमान की सैर करा दो.''

दुनिया की सैर

लेखिका - नलिनी राय

एक नन्हा सा सूअर का बच्चा हमेशा मायूस सा रहता था, क्योंकि उसे कोई पसंद नहीं करता था. जब भी वह इधर उधर घूमता तो सभी उसे डांटकर भगा देते थे. वह भी घूमना चाहता था सारी दुनिया देखना चाहता था. जब भी वह आकाश में पक्षियों को उडते देखता तो सोचता काश! मेरे भी पंख होते तो मैं भी उड़ता और सारी दुनिया की सैर करता. एक दिन अचानक उसने देखा कि एक बच्चा पैराशूट की सहायता से आकाश में उड़ रहा था. फिर क्या था उसने भी एक रंग बिरंगा पैराशूट बनाया और खुशी खुशी आसमान की ओर उडने लगा-सारी दुनिया की सैर करने.

सपनो की उड़ान

लेखक - राकेश कुमार अनंत

एक खरगोश का छोटा बच्चा था जिसका नाम चीकू था. चीकू बहुत ही समझदार और मेहनती था. वह हमेशा अपने आस-पास की चीजों को ध्यान से देखता और उन्हे परखने की कोशिश करता. एक दिन सुबह-सुबह चिड़िया के चहचहाने की

आवाज़ सुनकर चीकू की नींद खुल गयी. चीकू उड़ती हुई उस चिड़िया को ध्यान से देखने लगा और सोचने लगा कि अगर मै भी उड़ पाता तो कितना अच्छा होता. चीकू मेहनती था. उसने अपनी मेहनत और सूझबूझ से एक पैराशूट बनाया और वह आसमान की सैर करने लगा. चीकू ने उड़ते हुए जब नीचे पेड़-पौधों, नदी, पहाड़ आदि को देखा तो सब छोटा-छोटा दिखाई देने लगा जिसे देख कर चीकू बहुत खुश हो गया. चीकू ने अपनी मेहनत और सूझबूझ से अपने सपनो की उड़ान को पूरा किया. अगर हम सब मे भी कुछ करने की दृढ़ इच्छा हो तो सब कुछ सम्भव है.

<u>सपना हुआ साकार</u>

लेखक - हिमांशु मधुकर

बॉबी बहुत प्यारी बच्ची है. वह अपने पिता के साथ पहाड़ी इलाके में रहती है. वह हमेशा आकाश मे पक्षियों को उड़ते हुए देखती थी. वह हमेशा सपना देखती थी कि वह भी बादलों के बीच उड़ रही है. एक बार कुछ मनुष्यों को भी आकाश में उड़ते हुए देखकर उसने अपने पिता से कहा - "पापा मै भी इन लोगों की तरह उड़ना चाहती हूं.'' पिताजी ने बॉबी को बताया कि वे लोग पैराग्लाइडिंग कर रहे हैं. वे ऊंचाई से दौड़ते हुए आते हैं और पौराशूट की सहायता से उड़ जाते हैं. पिताजी ने कहा - "लेकिन बेटी हम यह नहीं कर सकते, क्योंकि पैराशूट खरीदने के लिये हमारे पास पर्याप्त धन नहीं है.'' बॉबी उदास हो गई लेकिन उसने ठान लिया कि वह पैराग्लाइडिंग करके रहेगी. शाम को वह पिताजी सबकी नज़रें छिपा कर पहाड़ी की ओर गई. वहां पर उसे बहुत से लोग पैराग्लाइडिंग करते हुए दिखाई दिये. अचानक पीछे से उसके चाचा ने उसे आवाज़ दी. उन्होंने कहा - "तुम पैराग्लाइडिंग करना चाहती हो. मैं तुम्हें पैराग्लाइडिंग कराऊंगा.'' बॉबी बहुत खुश थी क्योंकि उसका सपना साकार होने वाला था.

अब नीचे का चित्र देखो और इस पर कहानी लिखकर हमे जल्दी से भेजों -

<u>सही जोड़ी मिलाना</u>

लेखक - दिलकेश मधुकर

आओ बच्चों आज तुम्हें एक मज़ेदार खिलौना बनाना सिखाएं. इससे खेल-खेल मे से सामान्य भी ज्ञान बढ़ेगा.

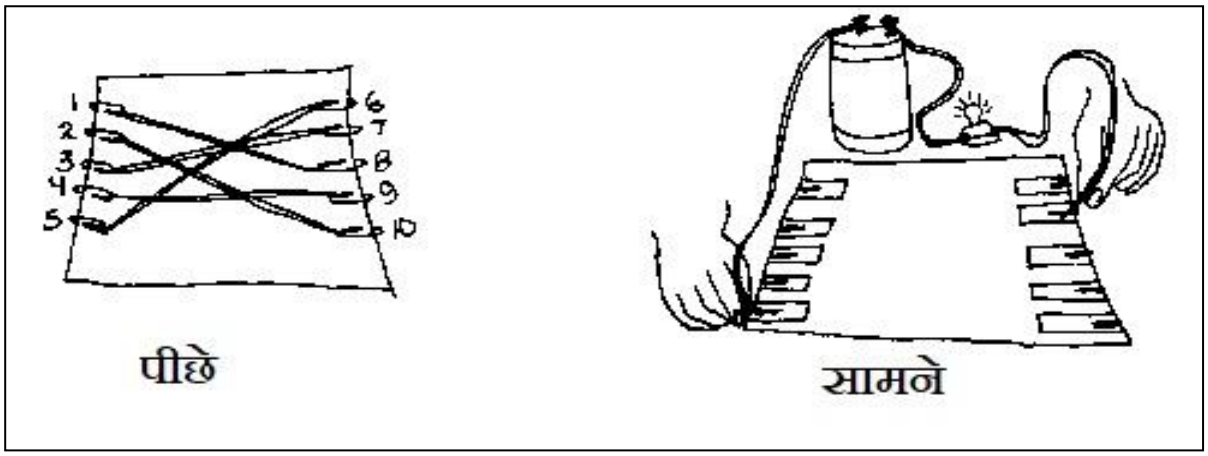

आवश्यक सामग्री:- मोटा कागज या पुट्ठा, कलर पेन, टार्च बल्व, बैटरी, वायर, आलपिन या कीलें.

निर्माण विधि - कागज की शीट पर एक उचित संबंध का प्रश्न तैयार कर लो. प्रश्नों और उत्तरों के पास एक-एक आलपिन या कील लगा दो. प्रश्न के सिरे से वायर जोड़ते हुए एक बैटरी तथा बल्व जोड़कर अगला सिरा उत्तर पिन पर लगा दो. एक खुला वायर प्रश्न का उत्तर खोजने के लिए रखो.

गतिविधि - खुले वायर का एक सिरा प्रश्न पिन पर रखकर दूसरा सिरा उत्तर पिन पर रखते जाओ. सही उत्तर होने बल्व जल जायेगा.

सावधानी:- सभी परिपथ सही और अच्छे से जुड़े हों. घरेलू बिजली कनेक्शन का इस्तेमाल कभी न करना. इसमें खतरा है.

आओ हंस लें

पिता (बेटे से) - देखो बेटे , जुआ नहीं खेलते. यह ऐसी आदत हैं कि यदि इसमें आज जीतोगे तो कल हारोगे, परसों जीतोगे तो उससे अगले दिन हार जाओगे.

बेटा - बस, पिताजी ! मैं समझ गया, आगे से मैं एक दिन छौड़कर खेला करूंगा.

एक बच्चे ने दूसरे बच्चे से पूछा - क्या तुम चीनी भाषा पढ सकते हो ?

दूसरे बच्चे ने कहा - हां , अगर वह हिंदी तथा अंग्रेजी में लिखी हो तो...

एक तोता एक कार से टकरा गया, तो कार वाले ने उसे उठाकर पिन्जरे मे डाल दिया.

दूसरे दिन जब तोते को होश आया, वह बोला - आईला! जेल, कार वाला मर गया क़्या ?

बच्चा - मम्मा क्या मैं भगवान की तरह दिखता हूं ?

मम्मी - नहीं, पर तुम ऐसा क्यों पूछ रहे हो बेटा.

बच्चा - क्योंकि मम्मा मैं कहीं भी जाता हूं तो सब यही कहते हैं कि हे भगवान फिर आ गया

एक पहलवान बच्चे ने एक कमजोर आदमी को थप्पड़ मारा.

कमजोर ने पूछा - "यह थप्पड़ गुस्से से मारा है या मजाक से ?

पहलवान कहा - गुस्से से.

कमजोर बोला - "फिर ठीक है, क्योंकि मजाक मुझे बिलकुल पसंद नहीं है.

होशियार लड़का

लेखक - हिमांशु मधुकर

एक नन्हे पाठक ने चित्रमय कहानी लिखी है जो हम आपके लिये यहां प्रकाशित कर रहे हैं-

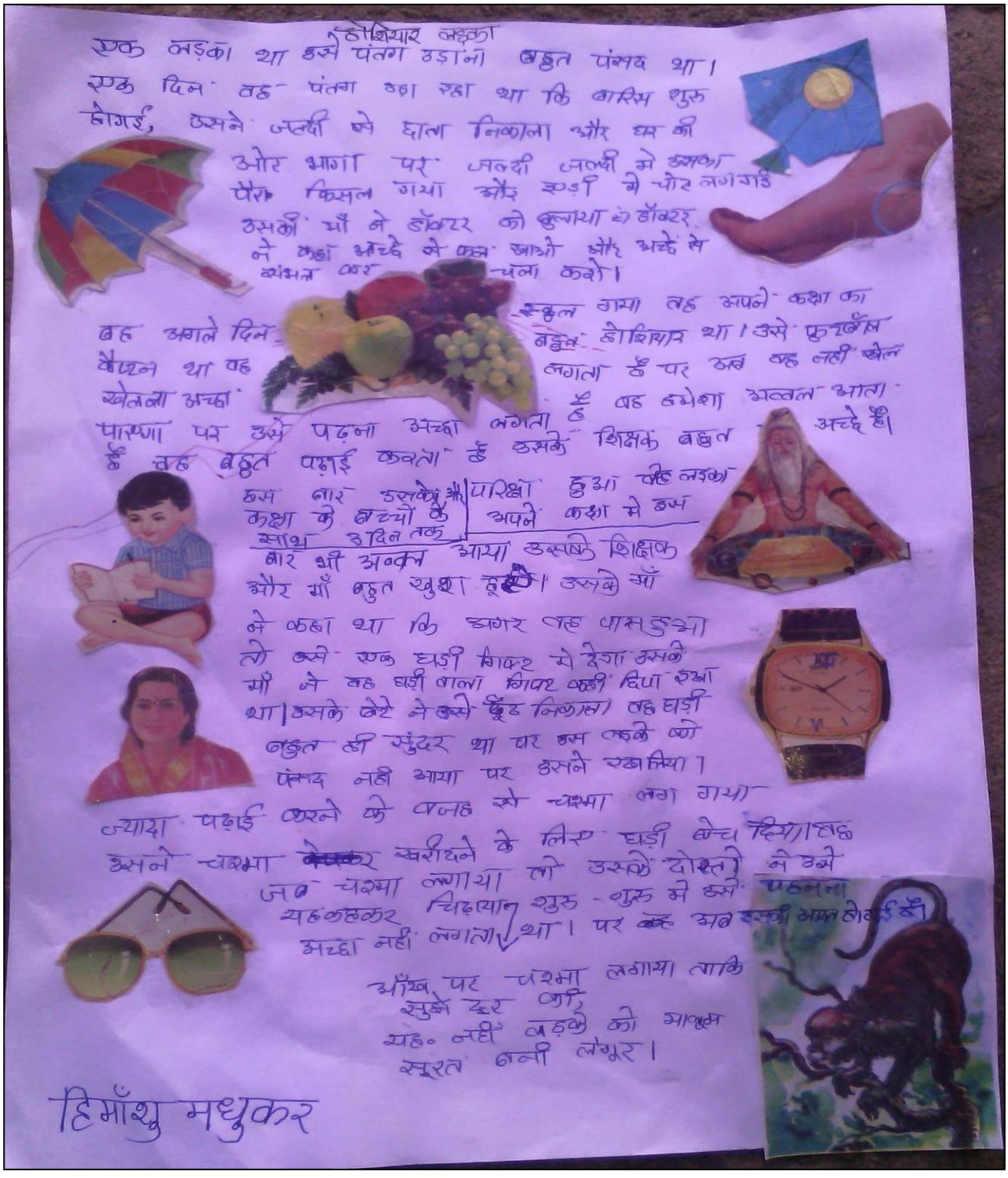

<u>विज्ञान के खेल - कागज़ या प्लास्टिक के कप में पानी उबालना</u>

सावधानी - यह प्रयोग खतरनाक है, इसलिये इसे कोई बच्चा स्वयं न करे. यह प्रयोग केवल बड़ों के व्दारा किया जा सकता है, एवं बच्चों को दूर से दिखाया जा सकता है.

कागज़ एवं प्लास्टिक बहुत ज्वलनशील होते हैं इसलिये इनके कप को यदि आग पर रखा जाये तो वह तत्काल ही जल उठेगा. परन्तु यदि कागज़ अथवा प्लास्टिक के कप को पूरा पानी से भरकर आग पर रखा जाये तो यह जलते नहीं हैं. यहां तक कि कुछ देर में पानी उबलने लगता है.

कारण - क्योंकि कप बहुत पतले कागज़ या प्लास्टिक का बना होता है, इसलिये उसमें से ऊष्मा तत्काल पानी में चली जाती है, और कप का तापमान बढ़ नहीं पाता. पानी 100 डिग्री सेंटरग्रेड पर उबलने लगता है. भौतिकी के सिध्दांत के

अनुसार जब तक पूरा पानी उबल कर भाप नहीं बन जाता, तब तक पानी का तापमान 100 डिग्री सेंटीग्रेड ही बना रहता है, और उसमें जाने वाली ऊष्मा गुप्त ऊष्मा के रूप में पानी को भाप में परिवर्तित करने का काम करती रहती है. क्योंकि कागज़ एवं प्लास्टिक का ज्वलनांक पानी के उबलने के तापमान से अधिक है इसलिये कागज़ या प्लास्टिक का कप जलता नहीं है. है न मज़ेदार खेल.

पहेलियां

1. काली है पर काग नहीं,
   लम्बी है पर नाग नहीं।
   बल खाती है ढ़ोर नहीं,
   बंधती है पर डोर नहीं।
2. अपनों के ही घर ये जाये,
   तीन अक्षर का नाम बताये।
   शुरू के दो अति हो जाये,
   अंतिम दो से तिथि बताये।
3. बीमार नहीं रहती
   फिर भी खाती है गोली।
   बच्चे, बूढ़े डर जाते,
   सुन इसकी बोली।
4. एक पहेली मैं बुझाऊँ,
   सिर को काट नमक छिड़काउ।
5. खाते नहीं चबाते लोग ,
   काठ में कड़वा रस संयोग ।
   दांत जीभ की करे सफाई
   बोलो बात समझ में आई।

उत्तर- 1. चोटी, 2. अतिथि, 3. बंदूक, 4. खीरा, 5. दातून

चाचा नेहरू का बच्चों से प्रेम

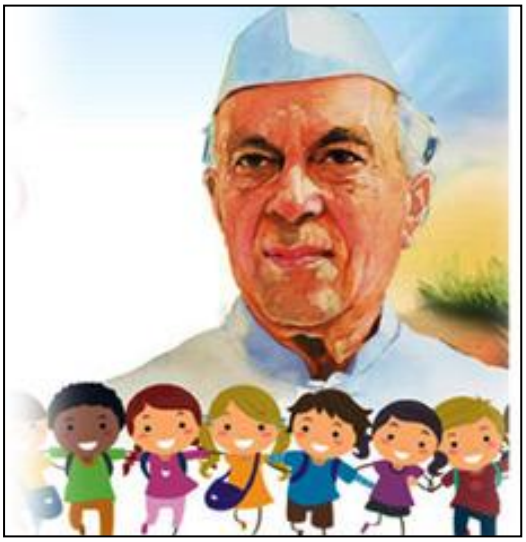

जवाहरलाल नेहरू भारत के पहले प्रधानमंत्री थे. उन्हें बच्चों से बहुत प्रेम था. इसीलिये बच्चे उन्हें प्रेम से चाचा करहते थे. तीन मूर्ति भवन प्रधानमंत्री का सरकारी निवास था. एक दिन तीन मूर्ति भवन के बगीचे में नेहरू जी टहल रहे थे. अचानक उन्हें एक बच्चे के रोने की आवाज़ सुनाई दी. नेहरू जी को पेड़ों के बीच एक छोटा सा बच्चा दिखाई दिया, जो जोर-जोर से रो रहा था. नेहरू जी ने बच्चे को उठाकर अपनी बाँहों में लेकर उसे थपकियाँ दीं और झूला झुलाया तो बच्चा चुप हो गया और मुस्कुराने लगा. बच्चे को मुस्कुराते देख चाचा खुश हो गए और बच्चे के साथ खेलने लगे। जब बच्चे की माँ वहाँ पहुँची तो बच्चा नेहरूजी की गोद में मंद-मंद मुस्कुरा रहा था.

<u>वर्ग पहेली</u>

इसमें फलों के नाम खोजो -

उत्तर -

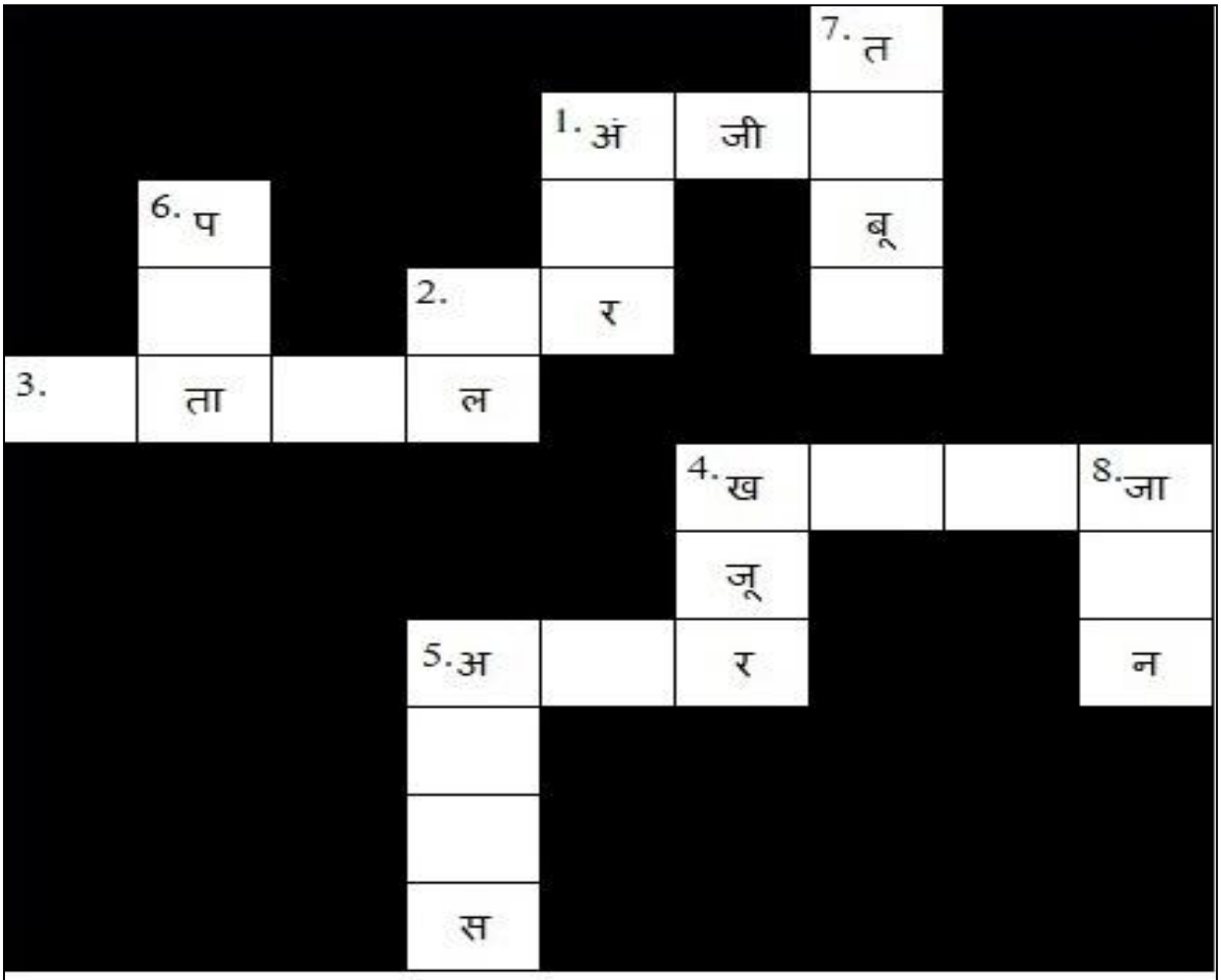

बायें से दायें 1. अंजीर, 2. बेर 3. सीताफल, 4. खरबूजा, 5. अनार

ऊपर से नीचे 1. अंगूर, 2. बेल , 4. खजूर, 5. अनानास,

6. पपीता, 7. तरबूज, 8. जामुन

प्रकाशक एवं संपादक- डा. आलोक शुक्ला, जे-7, श्रीरामनगर रायपुर (छ.ग.)